Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 14 अंक 08 30 अगस्त, 2014 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

एस जी पी सी के मामलों में दखल अंदाजी, लोकतांत्रिक या राजनीति

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

विडंबना ही है कि आज संविधान के रक्षक ही उसे तार-तार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं कर रहे हैं। कानून व्यवस्था बनाए रखने के जिम्मेदार ही राष्ट्र की एकता और अखंडता को छिन्न-भिन्न कर रहे हैं। भारत की आजादी से पूर्व अंग्रेंज एक मंत्र हुकमरानों के कान में फूंक गए - ''फड़ो और राज करो।'' आज भी इसी तर्ज पर राजनैतिक रोटियां सेंकी जा रही हैं। आवास, शिक्षा, खाद्यान्न, स्वास्थ्य या धर्म से जुड़ा ही क्यों ना हो, राजनेता अपनी मनमानी से स्वंच्छंद ब्रताव कर रहा है। हाल ही के दो पहलूओं को ही वर्णित कर रहा हूं। प्रथम किस्सा है हरियाणा में सूचना आयुक्तों की नियुक्तियों का जो कि राज्यपाल ही कर सकते हैं। नए रज्यपाल ने पद ग्रहण 27 जुलाई को ही कर लिया था। आयुक्तों की नियुक्तियां हुई नहीं सीधा शपथ ग्रहण और वह भी मुख्यमंत्री के निवास पर। अचंभित तथ्य यह है कि जिस प्रदेश में हुड्डा दहरियाणा शहरी प्राधिकरणड्ड का एक 100 गज का प्लाट पावर आफअट्रानी, मुख्तयारनामें पर बदली नहीं हो सकता वहां कठपुतली राज्यपाल जाते-जाते राज्यपाल की शक्तियों का मुख्तयारनामा मुख्यमंत्री को दे गए जो भारतीय इतिहास में ही नहीं विश्व के इतिहास में भी एक काला अध्याय ही लिखा जाएगा। वास्तविकता तो यह है कि ऐसे कृत्यों से काले कारनामों को छिपाने के लिए जनता का ध्यान बटाया गया। दूसरे मुद्दे में हरियाणा गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी का अलग से गठन जो विधान सभा के अधिकार क्षेत्र में नहीं है। इसका सत्यापन भी राष्ट्रपति ही कर सकते हैं लेकिन इसमें भी सरकार की मंशा में निजी स्वार्थ स्पष्ट दिखाई देता है।

वास्तविकता है कि प्रदेश सरकार द्वारा 10 वर्ष तक लूट-खसूट का शासन, भाई भतीजावाद किया, जिससे जनता आजिज हा चुकी है और परिणाम आने में देरी नहीं है। आज मुख्यमंत्री की मंशा ऐसे उल्टे सीधे कार्य कर केंद्र सरकार को उकसाना है कि वे कोई एक्सन ले, सरकार बरखास्त करें और वह नाखुन कटवाकर शहीदी जामा पहन सके। जनता के सामने तो बयां होगा कि केंद्र सरकार ने काग्रेंस की सरकार बर्खास्त कर दी। कांग्रेंस को राष्ट्र ने धूल चटा दी है। तीसरी बार मुख्यमंत्री का दिव्य सपना लेना बंद करें और अपने भविष्य को देखें। श्री औम प्रकाश चौटाला को जिस ना किए जूर्म में सलाखें के पीछे करवाया गया है खुद का किरदार उसी पहलू पर बदतर है। वैसे कांग्रेंस का यह पुराना शौक है। जम्मू काश्मीर की श्री फारूख अब्दुला की लीगल सरकार श्री राजीव गांधी ने गिरा दी और बाद में जो हुआ सर्वविदित है। आंध्र प्रदेश की एन टी रामाराव की सरकार को गिरा दि य और विपक्ष और राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के दबाव में थूक कर चाट लिया। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जहां राष्ट्र की एकता और अखंडता को तोड़ने के प्रयास किए गए। पंजाब में सरदार गुरनाम सिंह की दअकाली दलड्ड की सरकार तोड़कर लक्ष्मण सिंह गिल की सरकार बनवा दी और अल्प अवधि में टांग भी खींच ली इत्यादि।

शिरोमणी सिख गुरूद्वारा प्रबंध कमेटी नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें श्री अकाल तख्त ही सुप्रीम है और कमेटी भी उनके मार्ग पर ही चल रही है। माईक्रो मैनेजमैंट बेहतर प्रबंधों हेतू सिख कौम स्वंय कर सकती है। अगर हरियाणा के सिखों की मांग की बात है तो वह 10 वर्ष पूर्व भी कर रहे थे तब तो आप अक्सरीयत में थे। केंद्र सरकार भी आपकी थी और राज्यपाल को कठपुतली अब भी बनाया गया तब तो और भी आसान था। दिल्ली के सरना बंधु दिल्ली में शीला दीक्षित के बलबूते क्या करते रहे, से उनकी फजीहत जग जाहिर है। आज वही सरना बधुं हरियाणा के सिखों के पैरोकार बनने का प्रयास कर रहे हैं। हरियाणा में आज सरकारी आंकड़ों के अनुसार 72 के करीब गुरूद्वारे मौजूद हैं और हर एक की अपनी महत्ता है, कुछ स्थलों को उच्च स्थान प्राप्त है। यहां गुरू साहेबान स्वंय पधारें। उनकी मान्यता में हरियाणा ही नहीं विश्व सिख समुदाय के साथ-साथ भारतीय समाज भी नतमस्तक है। प्रश्न है कि इन गुरूधामों के वार्षिक बजट का गोलक करीब 150 से 200 करोड़ रूपये की है। इस पर कब्जा कैसे किया जाए। इसके लिए यह पग उठाया गया है ताकि चित भी मेरी और पट भी मेरी। संविधान का क्या है इससे पूर्व भी संशोधन हुए हैं और खिलवाड़ भी। एक बार चुनावी विसात पर नई गोटियां बिछाई गई हैं लेकिन जनता जनार्दन कल भी जागरूक थी, आज भी है और कल भी रहेगी। वे अपने निर्णय चुपचाप लेती है और बे आवाज कदम से बड़े से बड़े तीस मारखां को धूल चटा देती है। यही लोकतंत्र की खूबसूरती है। आज लठबल, धनबल का प्रभाव कम हो चुका है लेकिन जनता किसी की जेब में नहीं रहती वे अपने निर्णय स्वतंत्रता से लेती है।

सिख समुदाय कांग्रेंस की इस चाल को अच्छी तरह पहचानता है। कांग्रेंस उनकी हितैषी कैसे हो सकती है। सन् 1984 के घाव अभी भरे नहीं है दोषी अभी कानून के दायरे से परे है, फिर वे इनकी चाल में कैसे फंस सकते हैं। मुझे एक शायर की पंक्तियां स्मरण हो आती हैं कि ''हम रोने पे आए तो दरिया ही बहा दें पर कोई हमें रूलाए क्यों?

-शेष पेज 2 पर

’k"k i;t&1

सिख समुदाय कुछ भी माफ कर सकता है, घर आए मेहमान की पूरी इ÷ात करता है लेकिन अपने गुरूधामों में मुदाखलत कभी कबूल नहीं कर सकता। मोर्चा लगाने में वे सदा विज़्यात रहे हैं। आज वे मिल बैठकर सर्वमान्य हल निकालने की प्रक्रिया में हैं तथा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यथास्थिति बनाए रखने के आदेशों को मानते हुए वे शांत हैं।

श्री अकाल तज़्त साहेब, हरिमंदिर साहेब तथा सभी पांचों तज़्त एक विशेष महज़्ता रखते हैं, जब उनकी प्रतिनिधि मिल बैठने को तैयार हो गए हैं और शांति स्थापना की ओर ठोस पग भी सभी को सर्वमान्य होगा। बटवारे होते आए हैं। दिल्ली की प्रबंधन कमेटी अलग है। गुरूधाम ननकाना साहेब और पंजा साहेब पाकिस्तान में रह गए लेकिन इनकी इतिहासिक महज़्ता और मान्यता आज भी पूर्णतया कायम है। लाखें श्रद्धालू अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने आज भी पाकिस्तान जाते हैं और गुरू घर की शोभा बढ़ाते हैं। बेगाने मुल्क और बेगाने परिवेश में भी उनकी पवित्रता बनाए हुए हैं लेकिन किसी के धार्मिक मामलों में किसी भी राजनैतिक पार्टी को दखल अंदाजी किसी को भी मान्य नहीं है। हरियाणा के सरकारी दावे कुछ भी हो, शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबंध कमेटी ने हरियाणा से और सदस्य एस जी पी सी में लेने की पेशकश की है। उनका मानना है कि गुरूद्वारा एज़्ट प्रोवैंशियल एज़्ट है। पुर्नगठन के तहत एज़्ट में संशोधन के बाद केवल केंद्र सरकार ही कुछ कर सकती है दूसरा कोई नहीं ज़्योंकि यह कंकरैंट लिस्ट में है तथा एस जी पी सी एक अंतर्राष्ट्रीय कारपोरेट है। हरियाणा सरकार के फैसले को राज्यपाल से स्वीकृति ग्रहण कर राष्ट्रपति की सहमति जरूरी है जो हरियाणा में नहीं हुई है। अतः अभी तक यह एज़्ट अधिनियम वैध नहीं है। आज भी एस जी पी सी का फरमान है ''फहराते निशान रहे पंथ महाराज के।''

आजादी से पूर्व गुरूद्वारों का प्रबंध महतो के पास था जो इस धन का दुरूपयोग कर रहे थे। गुरूद्वारा सुधार लहर स्थापित कर प्रबंध पारदर्शी तथा लोकतांत्रिक बनाकर जनता को सौंप दिया गया । सिख गुरूद्वारा एज़्ट 1925 हेतू वर्ष 1920 से संघर्ष कर सिख गुरूधामों को महंतों के चुंगल से निकाल सिख मर्यादा द्वारा सेवा शुरू करवाई गई।

सिख गुरूद्वारा एज़्ट हेतू एक लंबा संघर्ष हुआ जिसमें 65000 लोग कैद हुए और 400 सिख शहीद हुए। उन पर तरह तरह के तशदद किए गए लेकिन वे झुके नहीं। वर्ष 1922 में अंग्रेंज सरकार झूकी तथा लाल कपड़े में बंधी गुरूधामों की चाबिया तत्कालीन एसजीपीसी के प्रधान बाबा खड़ग सिंह को 19 जनवरी 1922 को सौंप दी गई। वर्ष 1925 में यह एक एज़्ट बन गया तथा प्रबंधन शिरोमणी कमेटी के हाथों आ गया। आज भी सुबह शाम की अरदास में पाकिस्तान में रह गए गुरूधामों की सेवा के लिए प्रार्थना की जाती है। वर्ष 1959 में मास्टर तारा सिंह और पंडित जवाहर लाल नेहरू में एक समझौता हुआ तथा माना गया कि सिखों के धार्मिक मामले में सरकारी हस्तक्षेप नहीं होगा तथा एज़्ट में कोई भी संशोधन जनरल बाडी की इच्छा से संभव होगा।

वर्ष 1966 में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा चंडीगढ़ की स्थापना हुई 1966 के एज़्ट की धारा 72 के तहत सभी गुरूद्वारों का संचालन साझा ही रहा इसकी मान्यता मिल गई। वर्ष 1966 से अब तक पांच तज़्तों, दमदमा साहेब, तलवंडी साबों, स्त्री चुनाव क्षेत्र आरक्षण इत्यादि का संचालन 1952 के एज़्ट की धारा 85 के तहत केंद्र सरकार करती आ रही है तथा एस जी पी सी को अंतर्राजीय कारपोरेट का दर्ज हासिल है।

एज़्ट संशोधन की शक्तियां कंकरैट लिस्ट-3 की एंटी 28 के तहत भारतीय संविधान के सातवें शडयूल के अनुसार केवल केंद्र सरकार ही ऐसा करने में सक्षम है। जनरल बाडी के 170 मैंबर चयनित हैं जो कि पारदर्शी एवं बेहतर प्रबंधन हेतू काम करते रहें हैं। इन मैंबरों में हरियाणा से 11 तथा 15 मनोनीत हैं जो पूरे भारतवर्ष से हैं।

सिख गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के चुनाव भी भारत सरकार द्वारा नियुक्त गुरूद्वारा चुनाव आयोग के माध्यम से क्रेंद्रीय गृह मंत्रालय की देखरेख में कराए जाने का प्रावधान है और कोई भी राज्य सरकार पृथक तौर से चुनाव नहीं करवा सकता। वर्ष 2005 में भी वर्तमान हरियाणा सरकार द्वारा अलग गुरूद्वारा कमेटी बनाने हेतू अधिनियम बनाने के लिए एल आर से मंत्रणा ली गई थी तब भी एल आर ने सुझाव दिया था कि अलग गुरूद्वारा एज़्ट बनाने से वर्तमान सिख गुरूद्वारा प्रबंध कमेटी का प्रबंधन छिन्न-भिन्न हो जाएगा और इससे हरियाणा में सिख गुरूद्वारों के नियंत्रण तथा संपज़ि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा इसलिए भी सरकार द्वारा बनाए गए इस बिल को राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलना जरूरी है।

सिख आज भी आप्रेशन ज़्ल्यू स्टार तथा 1984 के सिख कत्लेआम में कांग्रेस को दोषी मानते हैं। गांधी परिवार बदले की भावना से सिखों की आंतरिक मामलों में आदतन दखल अंदाजी कर रहा है। वोट बैंक के निहित स्वार्थों हेतू कांग्रेस की समाज के ताने-बाने को तोड़ने की आदत है तथा सिखों को फाड़ने की साजिश है व पार्टी द्वारा उठाया गया पग लोकतांत्रित मर्यादाओं के विरूद्ध है। इसका उज़्र जनता मतदान के दिन ही देगी। जगजीत सिंह झींडा कांगेस के नाव के खेवट नहीं बन सकेगें। अब सिख समुदाय तथा सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के समक्ष ही स्थिति स्पष्ट होगी लेकिन जिस मंशा से पग उठाया गया है अंगूर खट्टे ही रहेगें।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

भारत की आजादी और किसान

lqj tHkku nfg;k

15 अगस्त, 1947 को दिल्ली में महात्मा गांधी की प्रातःकाल की प्रार्थना सभा में अनेक नर–नारी उपस्थित थे। कई लोगों ने गांधी जी से प्रश्न किया–''बापूजी! आज बड़ा शुभ दिन है– स्वतंत्रता की शीतल लहर प्रवाहित हो रही है, अब इस नव व्रातावरण में हमें क्या दायित्व निभाना होगा?'' बापूजी ने कहा– ''गांवों को बेहतर बनाइये, किसान को खुशहाल बनाइये– यही असली भारत है। इसे सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास की ओर ले जाने का संकल्प लीजिये, बस मेरे इस निवेदन को स्वीकार कीजिये– यही इस पुनीत वेला की पुकार है।'' आज भारत को आजद हुये 67 वर्ष हो चुके हैं क्या भारत का ग्राम्य जीवन उज्जवल है? क्या भारत का किसान समृद्ध है? कहां गया वह भारत भाग्य विधाता? स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर भारी भरकम तंत्र को देखकर किसान को सिर्फ निराशा नजर आती है। उसके मन में सवाल उठता है कि यह हमारे लिये ही है या किसी और के लिये। या कहीं हम तो इसके लिये ही हैं? पर वह एक सवाल जरूर करता है– ''क्या वर्तमान तंत्र ने गांधी जी की बात अनसुनी कर दी है? आखिर इस गणतंत्र के जनक तो वे ही हैं न। उसका निष्कर्ष तो यही है– 15 अगस्त 1947 को हमें आजादी नहीं मिली सिर्फ सत्ता का हस्तांतरण हुआ।

आज कि किसान के जीवन का चित्रण करने हेतु मुंशी प्रेमचंद के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास– 'गोदान' का यहां उल्लेख करना उचित होगा। गोदान में प्रमुख पात्र है– होरी। एक आलोचक ने होरी का चित्रण इन शब्दों में खींचा है– ''वह पैदा हुआ, दुःख भोगता रहा और मर गया।'' होरी से अधिक सजीव किसान चित्रण शायद ही कहीं उपलब्ध हो। होरी भारतीय किसान का सच्चा प्रतिनिधि है। मुंशी प्रेमचंद का होरी तो कर्जे के तले दबकर मर गया पर आज तो हजारों किसान कर्जे के असहनीय वेदना से आत्महत्याएं कर रहे हैं। आज के होरी का साथ तो कोई भी नहीं दे रहा। यदि आज मुंशी प्रेमचंद जीवित होते तो वे कदाचित किसान की दयनीय स्थिति देखकर 'गोदान' से भी मार्मिक उपन्यास लिख डालते। जो अन्न पैदाकरे और वही भूख लाचारी से आत्म कर डाले, इस युग की सबसे बड़ी ट्रैजेडी है। किसान का पहले ठाकुर/सेठ–साहूकार जबरदस्ती अंगूठा लगवाता था। अब चूनी सरकार लगवाती है। क्या बदला है– सफेद सरकार से काली सरकार– किसान का शोषण तो जारी है।

किसान की अमानवीय दशा देखकर चौ. छोटूराम ने किसान शोषण मुक्ति का बीड़ा उठाया। उन्होंने भी मुंशी प्रेमचंद की भांति किसान गीता 'बेचारा जमींदार' में किसान को आह्वान किया– ''भोले किसान! तू सिर से पैर तक आवाज बन जा। अपने अंदर नदी का शोर उत्पन्न कर। समुद्र का ज्वार भाटा बन। सिंह की दहाड़ सीख। नीचे मत देख, वह पाप है, कायरता है, ऊपर आसमान की ओर देख। पृथ्वी का विचरण करने वाला मुर्गा मत बन, ऊपर उड़ने वाला बाज बन। तेरे पांव जमीन पर टिके हो, पर नजर सातवें आसमान पर हो।''

साहित्य समाज का दर्पण होता है। उस समय के कवियों, कलाकारों तथा गायकों ने भी किसान के शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई। एक रागनी में दादा लखमीचंद कहते हैं–

''तन्नै अन्नदाता, जीवनदाता कहें, सबका है पालनहार।
जमीदार सुण कर्मबीर तू, सब तै बत्ती हीमतदार।
पर– धौरे सबकुछ, कुहना धौरे, सारे करम फिजूल तेरे।
नरक कुंड में पड्डया रहै, गए फूट भाग हरफूल तेरे।
कमा–कमा दूज्या का भरै, तनै मिलता ना टूकड़ा पेट भराई।
जिन खातर दिन रात कमोवे, लेज्यां सारी करी कराई।''

बर्फीली, ठिठूरती सर्दी, चिलचिलाती गर्मी, जहरीले कीड़े–मकोड़ों के बीच–बीच कीचड़ में सने किसान की कहानी बड़ी दयनीय एवं सोचनीय है। इसका अनुभव जब जाट कवि व गायक मेहरसिंह को होता है तो उसके मुख से अनायास यह पीड़ा मुखरित होती है–

''देख रोगटे खड़े हौग्ये या मेरी छाती धडकै,
गरीब किसान की जिंदगी क्यूकर बीतै सै मर–मरकै।
गर्मी म्हं आकाश तपै सै कोरी आग बरसती,
नीचे धरती आग उगलती दुनियां पाणी न तरसती।
पाटी धोती टूटे लित्तर पेट म्हं आग सुलगती,
शिखर दोपहरी पडै पसीना छां कडै ना दिखती।।

चौ. छोटूराम लाचार, निर्धन, ईश्वर के सताए, अत्याचारों से पीड़ित, दैवी दुःखों से दबे, धोखा धड़ी के शिकार, प्रकृति के हाथ के खिलौने पड़ोसियों के लिये मजाक के साधन, खुशियों से अनभिज्ञ, दुःखों के दोस्त औरसरकार की सुरक्षा से वंचित किसान के जीवन को बहुत समीप से देख चुके थे। वे समझते थे कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश की उन्नति गांवों के उत्थान द्वारा ही संभव है और गांव की प्रगति तब तक नहीं हो सकती जब तक कि किसान को उसका श्रेय व प्रेय नहीं मिलता। वे किसान की उन्नति को चरम सीमा तक पहुंचाने के लिये दृढ़ संकल्प ले चुके थे और इसके लिये राजनीतिक, वैचारिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्रांति लोन के सिवाय उन्हें दूसरा रास्ता नहीं दिखाई देता था।

अपने उपरोक्त गंतव्य तक पहुंचने हेतु उन्हें कड़ी तपस्या करनी पड़ी। जब 1981 में उनके जन्मशताब्दी समारोह आयोजित हुये तो उनकी पुत्री ने एक समारोह में अवगत कराया था– ''मेरे पिताजी न जाने कब सोते थे। जब

हम सोने जाते तो वे कार्य कर रहे होते थे तथा जब रात को कभी हम उठते तब भी वे कार्य में लगे हुये होते थे।'' उन्होंने अपने अथक प्रयासों से किसान को आर्थिक स्वतंत्रता दिलाई तथा राजनैतिक क्षेत्र में उनको सम्मानजनक स्थान दिलवाया।

वे पंजाब में किसान राज ला चुके थे। आजादी दलहीज पर थी, इसलिए वे भारत में किसान राज स्थापित करने की रूपरेखा बना रहे थे। यह उनके लिए एक चुनौती भरा मिशन था पर जोखिम उठाकर आगे बढ़ना उनका स्वभाव था। तुफानों से जूझने की ऊर्जा उन्हें जनसमूह से प्राप्त होती थी। नवंबर 1944 में उन्होंने झंग (पाकिस्तान) में तेज बुखार होते हुये एक अपार किसान सममेलन को संबोधित किया, वे वहां कोई दो–ढ़ाई घंटे बोले। इसके पश्चात वे लंबे समय के लिए बीमार पड़ गये, पर अपने किसान स्वराज को लेकर कार्यरत रहे। उनका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था। दिसंबर के महीने में उनकी सेहत चिंता का विषय बन गई। उनके निजी डाक्टर नंदलाल ने उन्हें संपूर्ण विराम लेने की सलाह दी, पर वे विराम लेने के लिए तैयार न थे। डा. नंदलाल ने पंजाब प्रीमियर खिजर हयात से अनुरोध किया कि वे चौधरी साहिब को समझाये। खिजर हयात ने उन्हें आग्रह किया– ''चच्चा जान! आपकी सेहत बिगड़ती जा रही है, हमें आपकी इस नाजुक घड़ी में सख्त जरूरत हैं आप कुछ समय आराम लें।'' इसको सुनकर चौधरी साहिब बोले– ''खिजर! मैंने किसान की बेहतरी के लिए न जाने कब से आराम को त्याग रखा है। मैं अब कैसे अपनी दिनचर्या को बदलूं। मेरी दिनचर्या में आराम के लिए समय नहीं है।'' और वे 9 जनवरी 1945 को सिर्फ 63 वर्ष की आयु में आराम न लेने के कारण परलोक सिधार गये। यह किसान समुदाय की 20वीं सदी की महानतम ट्रैजेडी बन गई।

साहित्य और राजनीति का समन्वय किसी कौम के उत्थान हेतु अनिवार्य होता है। नजजागरण हेतु कोई भी नेता प्रेरणा साहित्य से लेता है। आज हमारे जाट लैंड में जाटू जुबान में साहित्य लुप्त होता दिख रहा है। कोई भी जुबान कमजोर तथा छोटी नहीं होती, यह तो जनसाधारण की भावना प्रगट होने का माध्यम है तो हमें अपनी जुबान को ध नाढ्य बनाने के प्रयास करने चाहिये। जाटलैंड के कुछ समाजशास्त्री यह मानते हैं कि चौ. छोटूराम दादा लखमीचंद व फौजी कवि मेहरसिंह समकालीन होने के कारण जाट कौम की प्रेरक शक्तियां बनी, और ये तीनों विभूतियों को लगभग एक साथ ही भगवान ने अपने पास बुला लिया और जाट लैंड में सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में शून्यता ला दी। तबसे किसान अनाथ है और उसका आज इस धरती पर हिमायती नहीं है– किसान आज सिर्फ एक शोषण सामग्री बनकर रह गया है। बस आंसू बहाकर एक किसान दूसरे किसान को सांत्वना देने के लिए कहा देता है– ''भाई रै! प्यार करणिया मरग्ये।''

भारतीय यकिसान को आज अपने मसीहा का तलाश है। वर्तमान राजनीतिक माहौल में उसे कोई सशक्त किसान राजनेता नहीं दिखाई देता। यह भी तो एक ट्रैजेडी ही है।

महान् गौभक्त और क्रांन्तिकारी हरफूल जाट जुलाणी का

हरफूल जाट का गौत्र श्योरण था। यह पूरे उत्तरी भारतवर्ष में जुलाणी वाले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हरियाणा अभिलेखागार, हिसार के अनुसार इनके पिता का नाम रत्ना था। कुछ लोगों के अनुसार यह गाँव बारवार बावनी के इन्द्रायण पाने का रहना वाला था। वहाँ के लोगों के अनुसार इसके पिता का नाम चतरू राम तथा दादा का नाम किताराम था। इनका गाँव जुलाणी (जींद) जिला में पड़ता है पुराने जमाने में इनके पूर्वज बागड़ से इस जुलाणी गाँव में आकर बसे थे। उसी दौर में इनके पिताश्री की मृत्यु हो गई थी। इनका जन्म लगभग 1892–93 ई. के आसपास हुआ था। उस समय छपना का अकाल पड़ा था, इससे दुखी होकर माता–पिता अपने बच्चों को लेकर संडोवा, जिला भिवानी में अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ चले गए। इसी दौर में माता को इनके नजदीकी चाचा रत्ना का लत्ता उढ़ा दिया। जैसे–जैसे यह बड़ा हुआ लोग इसे गैलडिया कहकर पुकारते थे और अपमानित करते थे।

ज्यों–ज्यों हरफूल बड़ा हुआ वह उपेक्षित हो इन तानों को महसूस करने लगा था। जब इसने अपने चाचा से अपना हिस्सा, जमीन–जायदाद को माँगा, तो उसने साफ इंकार कर दिया। उसी समय इसके नीयत खराब चाचा ने गाँव के कुछ आदमियों से मिल कर थाना जीन्द में पकड़वा दिया। वहाँ पर थानेदार ने इनको खूब मारपीट कर गोलालाठी देकर असहनीय कष्ट दिए। इनके पैरों में बेड़ी डालकर, जब वे ताश खेलने लगते थे तो इसके हाथों की हथेलियों पर पलंगों के पाव रखते थे और जबपैरों के पंजों पर पाव रखते थे तो हाथों में हथकड़ियाँ डाल देते थे। वहाँ पर इनको असीम कष्ट दिए गए। काफी दिनों के बाद इनको रिहा कर दिया गया। जब गाँव में जाकर इन्होंने पंचायत बुलाई तो उस पूरी पंचायत में चौधरी कूड़ाराम को छोड़कर अन्य बिल्कुल इसके विपरित थे। जवान होते ही ये सेना में जाकर भर्तीहो गये। वहाँ पर इन्होंनें ऐसे कारनामें किए कि अंग्रेज अधिकारी इनसे बहुत खुश व प्रभावित हुएं लगभग 10 वर्षों तक सेना में नौकरी करने के बाद जब इन्होंनें अपनी सेना से बिल्कुल छुट्टी की अर्जी दी तो इसके कामों से खुश होकर अग्रेंज अधिकारी ने कहा था, ''जवान बोल क्या माँगना चाहता हैं?'' तब इसने कहा था कि ''यदि आप दे सके तो मुझे एक फोलड़िग गन दे दो।'' वह इसे दे दी गई। वापिस आते ही सबसे पहले तो उसने जीन्द थाने के उस दरोगा को सदा की नींद सुलाया, जिसने उसे झूठे षड्यंत्र में फंसा कर असहनीय सजाएं दी थी। इसके बाद फिर गांव जुलाणी में गया तथा पंचायत की। उस समय भी पंचायत का वही जवाब था कि ''तू तो गैलडिया है, तेरे को हक कैसा?'' सारे गाँव के दरवाजे (किवाड़) बंद थे। यदि खुला था तो केवल चौधरी कूड़ाराम सत्यवादी का ही दरवाजा खुला था। उसने विरोधियों की सफाई करने के बाद, वह वहाँ से निकल पड़ा तथा दाएँ–बाएँ दूर–दराज के गाँव में

छूप कर अपना जीवन बिताने लगा। जब वह फौज में था तो सामाजिक लिहाज से इसके परिवार वालों ने इनकी बहिन की शादी डोभी (नरवाना) में कर दी। तब वह वहीं रहने लगा। वहां पर भी इनके मौसा ने इसको पकड़वाने की साजिश रची। इनको पता लग गया। अपने मौसा को भी सदा की नींद सुलाकर वहां से भी चलता बना। इस बीच वह जीन्द तथा लोहारू रियासतों के गांवों में घूमता–फिरता तक्का अपना जीवन गूजर रहा था।

अब वह दिशाहीन युवक था। समाज ने उसे अपनाया नहीं, ठौर–ठिकाना कोई था नहीं। उस समय देश गुलाम था। हिन्दू व मुस्लिम दंगों को भी शुरूआत हो चुकी थी। वह गायों से बेहद प्रेम करता था। टोहाना में मुसलमान रांघड़ों का एक गौ वध करने का हत्था था। उस नगर के हिन्दू लोग इससे बड़े दुःखी व पीड़ित थे। उसी गांव का एक बनिया था, जिसने किसी की मदद से हरफूल जाट को बुलाया तथा कहा, ''हम इन रांघड़ों का मुकाबला तो नहीं कर सकते लेकिन यह गौ हत्या हमें खटक रहा है। इसमें प्रतिदिन 12 बजे गऊओं को काटा जाता है। आप हमारी मदद कीजिए।'' तब हरफूल ने बनिये से कहा था कि ''लाला देख यदि तेरे अन्दर दम हो, तो मैं तैयार हूँ। सबसे पहले आपको मुझे वो जगहां दिखानी होगी तथा उन कसाईयों को कहना होगा कि यह गौ हत्या बंद करो। यदि वे नहीं मानते तो आपको मुझे अपनी स्त्री के वस्त्र व पूरे गहने देने होंगें।'' बनिया इसके लिए तैयार हो गया। जब वह हत्थे में जाकर उन रांघड़ों को कहने लगा कि ''हम हिन्दू हैं, आप कृपया करके यह गो हत्या बंद कर दीजिए।'' राघंड़ो ने कहा, "बाकी दिनों में में तो 10 गऊएँ ही कटती थीं, आज 12 गऊएँ काटी जाएगी।" बनिए ने ये सारी बातें हरफूल जाट को बताई। वह जनाने वस्त्र पहन, पूरे गहनों से सिंगार करके उस हत्थे में पहुंच गया तथा कहने लगा कि "मुझे मेरा पति छोड़ कर चला गया। ये गऊएं आपने यहाँ पर क्यों बांधी हुईं हैं" तो उतर मिला कि "ठीक 12 बजे इनका वध किया जाएगा।" तब उसे जनाने वेश में हरफूल ने कहा, "मैं तो हिन्दु नारी हूँ। निकाह के बाद ही मुसलमान बनूँगी, कृपया करके मेरे आगे पर्दा लगा दें।" राघडों के दिल में खोट तो था ही उन्होंने वैसा ही किया उस पर्दे की आड़ में हरफूल जाट ने, वे जनानी के सारे वस्त्र व गहने उतारे, थैले में डाले तथा थैले से मरदाने कपड़े पहनें और फोल्डिंग गन तैयार की। ठीक 12 बजे से पहले 1 मिनट पहले 23 जुलाई, 1930 ई. को उन सभी मुसलमान राघड़ों को भून डाला तथा गायों को मुक्त करा दिया। सारे नगर में रुक्का पड़ गया कि गौ वध करने का हत्था समाप्त कर दिया। हरफूल जाट सारे जनाने वस्त्र व गहने लेकर बनिए के घर गया, उनकों सौंपा तथा अपनी राह ली, बनिए के लाख कहने पर उसने उसने उन गहनों में से एक छल्ला तक भी नहीं लिया बल्कि उल्टा कहा कि "ये गहने मेंरी बहिन के हैं। मैं अपनी तरफ से एक रुपया अपनी बहन को देता हूँ। यह कार्य करके हरफूल ने अपना रास्ता नापा तथा जंगलों में जा छूपा। जिला जीन्द का ही एक अतिंम गांव जो गोहाना के पास था। मासलवाला वहाँ का मुसलमान रांघड़ उसका पक्का यार था एक बार ऐसी घटना घटी कि उसी कासू के हाथ से एक खागड़ मारा गया। वह क्षेत्र जाट बाहूल्य था। 20–30 गांवों की पंचायत हुई। कासू को मारने की सलाह बनाई गई। इनमें से कुछ लोगों ने कहा कि हरफूल जाट जुलानी वाला इस कार्य को आसानी से कर सकता है। हरफूल जाट जुलाणी वाला कट्टर हिन्दु था। अपनी दोस्ती की भी परवाह किए बिना उसने खागड़ को मारने वाले कासू रांघड को सदा की नींद सला दिया जब कभी कोई ठग–चोर धोखे राहगीरों को हरफूल का नाम लेकर लूटता था, तो वह उस व्यक्ति का पता लगा कर उससे माँफी मंगवाता। यदि वह आना–कानी करता तो उसको सदा की नींद सुला देता। एक दो घटनाएं इस प्रकार की हुई इस प्रकार किसी भी ढंग की ऐसी हिम्मत नहीं हुई कि वह किसी कमजोर राहगीर व औरत को लूट ले। इन सभी बातों नें हरफूल कों जमीन से उठाकर उत्तर भारत के लोगों की आंखों में आकाश पर बैठा दिया। वह फरारी की हालत में इधर–उधर घूमता–फिरता था। उसको हमेशा गिरफ्तारी का भय रहता था। वह छूपने के लिए इसी दौर में राजस्थान के गांव पचेरी में एक ठाकुर के घर पर जाकर रहने लगा। उस ठाकुर के दिल में बेईमानी आ गई क्योंकि अंग्रेज सरकार हरफूल को जिन्दा या मूर्दा गिरफ्तार करने या करवाने पर काफी बड़ा ईनाम रखा हुआ था। उसने मुखबरी करके हरफूल जाट को एक दिन सोते हुए गिरफ्तार करवा दिया। इसके बारे में एक कहावत यह भी है कि वह अपनी धर्म की बहिन, एक ब्राह्मण की लड़की के घर में ठहरा हुआ था यह धोखा उसकी धर्म बहिन ने किया था। कारण चाहे कोई भी रहा हो उस शेर को पिंजरे बन्द कर दिया गया। उस समय उसे हिसार की सैन्ट्रल जेल में बन्द कर दिया गया। वहां पर भी उसने अपनी एक निजी मित्र की सहायता से जेल में सुरंग बनवाई जब वह सूरंग उसकी बंद कोठरी में जाकर निकली तो कोई विशेष छलनी हुई जिससे जेल के वार्डन व पहरदारों ने उस सुरंग को देख लिया तथा हरफूल जाट को वहाँ से स्थानान्तरित करके फिरोजपुर की सैन्ट्रल जेल में भेज दिया गया। अंग्रेज अधिकारियों को भया था कि वह यह क्षेत्र जाट बाहुल्य है,ह कहीं जाट जेल पर हमला बोल कर उसे मुक्त न करवा लें। वहीं पर ही उन पर मुकदमा चलाया गया तथा हरफूल जाट को फांसी दी गई उनकी लाश को नदी में बहा दिया गया। इस प्रकार उस सवा शेर वाले जाट का अन्त हुआ। उसने अपने जीवन में कभी भी किसी गरीब को नहीं सताया। गरीबों की मदद और उनकी कन्याओं की शादियाँ करवाई वह पक्का आर्य, गौ पुजारी, सच्चा देशभक्त, एक समाज सेवी भारत माँ का सच्चा सपूत था। ऐसे व्यक्ति, इतने दिलवाले इस जगह में कभी–कभी ही पैदा होते हैं। खूद तो इस जमाने की ठोंकरें व अपमान खाने के लिए ही पैदा होते हैं।

ऐसी परिस्थितियाँ उसके जीवन में गुजरीं। उसने कभी किसी गरीब का दिल नहीं दुखाया। उसने धर्म की खातिर दोस्त को भी दांव पर लगा दिया। अन्यायियों को मज़ा चखाया। अपने इन दुश्मनों को मात के घाट उतारा, जिन्होंने उस पर असहनीय अत्याचार किए थे। उस जमाने में टोहाना का हत्था तोड़ कर वह महान् कार्य किया, जिसे हम आज स्वतंत्र भारत में भी नहीं कर सकते। वह महान् गौ प्रेमी व यौद्धा था, दिलेर था। हम उनकों कोटि–कोटि नमनः करते हैं। इसने जाटों का ही नहीं बल्कि न्यायवादियों का सिर ऊँचा किया है। धन्य है वह माँ, जिसने ऐसे लाल को जन्म दिया। उस पर आज भी अनेक लोक किंवदन्तियां प्रचलित हैं। गीत–रागनियों में वह कथानायक है। उसके अनेकों किस्से, रागनियाँ, सीडी, कैसेटों के रूप में उपलब्ध हैं।

प्रगतिशील किसान श्री गुरमीत सिंह

jkds'k lkjkgk

हरित क्रांति की जन्मभूमि होने का गौरव हरियाणा तथा पंजाब राज्यों को जाता है। इन दोनों राज्यों के किसानों तथा कृषि वैज्ञानिकों के सार्थक प्रयासों से भारत में हरित क्रांति आयी थी जिसका विस्तार बाद में सारे भारत में हो गया था। कृषि वैज्ञानिकों की खोजों व उनकी सलाह से किसानों ने कृषि उपज का उत्पादन करके भारत देश को कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना दिया था उसके पश्चात किसानों द्वारा भूमि से फसलों की अधिक से अधिक उपज प्राप्त करने के लिए रसायनिक खादों तथा कीटनाशकों दवाईयों के अन्धाधुन्ध इस्तेमाल करने से जहां भूमि की उपजाऊ शक्ति लगातार कम होती जा रही है वहीं कीटनाशक दवाईयों के अधिक छिड़काव से फसल भी जहरीली होती जा रही है जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव पड़ रहा है तथा लोगों को मधुमेह, हृदय तथा कैंसर जैसी बिमारियों का सामना करना पड़ रहा हे। ऐसे समय में गांव सन्तनगर जिला सिरसा (हरियाणा) के किसान श्री गुरमीत सिंह शेरगिल ने कृषि क्षेत्र के सुधारीकरण के लिए देसी जड़ी बूटियों से निर्मित एक ऐसे हर्बल उत्पाद की खोज की है। जिसके प्रयोग से जहां किसानों की रासायनिक खादों के प्रयोग से बंजर होती भूमि पर रोक लगेगी वहीं पानी का संकट भी काफी हद तक हल हो जायेगा। इस हर्बल उत्पाद का नाम उन्होंने हर्बल क्रांति रखा है। हर्बल खाद खेत के बीच में होने वाली खरपतावार व जड़ी बूटियों से तैयार की जाती है। गुरमीत सिंह द्वारा तैयार हर्बल क्रांति नामक उत्पाद खाद व कीटनाशक दोनों रूप में फसलों के लिए प्रभावशाली रूप से कार्य करता है तथा इसका प्रयोग सभी फसलों पर किया जा सकता है। गुरमीत सिंह का दावा है कि उन्होंनें सभी फसलों जैसे सब्जियां, धान, गेहूं, सरसों तथा चना आदि पर स्वयं निर्मित हर्बल खाद व हर्बल कीडेमार दवाई से उपरोक्त सभी फसलों पर प्रयोग कर सफलता हासिल कर ली है तथा अब वे अपने हर्बल उत्पाद को राष्ट्र को समर्पित करना चाहते है। उनके द्वारा निर्मित हर्बल उत्पाद कौन–कौन सी फसलों पर कौन–कौन सी बीमारी व मौसम में प्रभावशाली है। उसका विवरण निम्न प्रकार से है :–

1. डी.ए.पी. का विकल्प व कम खर्चीला, 2. बरसात के समय दो महीनों में सुण्डी मारने के लिए, 3. यूरिया व तेला मारने के लिये (दिसम्बर–जनवरी में उपयुक्त नहीं है) 4. फूलों को गिरने से रोकने के लिये (15 मई से 15 जुलाई तक उपयुक्त नहीं) 5. धान का पत्ता लपेट के लिये (मई, जून व जूलाई में उपयुक्त नहीं), 6. बिना पानी के फसल तैयार करने के लिये (सर्दियों में उपयुक्त नहीं), 7. सब्जियों पर ब्लाईट के हमले से बचाव के लिए, 8. धान पर घोड़े की बीमारी को रोकने के लिये, 9. पौधों के विकास के लिए (मई, जून, जुलाई में उपयुक्त नहीं), 10. जिंक, 11. धान का नदीन नाशक, 12. गेहूं का नदीन नाशक, 13. पीली कुंगी के इलाज के लिये, 14. यूरिया बरानी फसलों के लिये व खारे पानी के लिए (दिसम्बर, जनवरी में उपयुक्त नहीं) 15. फसलों को सर्दी से बचाती है (मात्र दो महीने में काम करती है) 16. बाहरी सुण्डी मारने के लिए (गर्मी की बारिश में उपयुक्त नहीं), 17. रस चूसक कीड़ों के लिए व यूनिया (बरसात में उपयुक्त नहीं), 18. यूरिया व बिना पानी फसल पकाने के लिए (केवल पूरी सर्दी में) ये डब्बर भूमि में फसलों का पालनपन दूर करती है। 19. बागों के फलों को फंगस से बचाने के लिए, 20. साटा/इटसिट मारने के लिए, 21. फलदार पौधों की जड़ों की फंगस के इलाज के लिए इसमें पौधों के लिए सम्पूर्ण खुराकी तत्व मौजूद है और यह फूल व फलों को गिरने से भी रोकती है, 22. धान छोड़ कर सभी फसलों का नदीननाशक है, 23. जिंक केवल बरानी फसलों के लिए, 24. पौधों व फलों के अन्दर घुसने वाली सून्डी मारने के लिए और गेहूं की नीमाटोड, गन्ने के रेड–रोड की भी रोक–थाम में लाभदायक है। (जनवरी में उपयुक्त नहीं)

इस प्रकार इस प्रगतिशील किसान व अद्भूत कृषि वैज्ञानिक ने अपने हर्बल उत्पाद द्वारा पानी के बिना अथवा कम पानी से खेती करने, फसलों की बिमारियों के इलाज के लिए 32 किस्म की हर्बल कीडेमार दवाईयां और उर्वक तैयार करने व अपने खेतों व अन्य कई किसानों के खेतों में प्रयोग कर अच्छी फसल तैयार करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। लेखक ने इस सम्बध में गुरमीत सिंह से उनके हर्बल उत्पाद के बारे में उनके पास जाकर जानकारी प्राप्त की वह इस प्रकार है :–

y[kd % गुरमीत सिंह जी आप अपना सक्षिंप्त परिचय दें।

xjehr flg % मेरा नाम गुरमीत सिंह शेरगिल है तथा में गांव सन्तनगर जिला सिरसा का छोटा सा किसान हूं तथा में सातवीं कक्षा तक पढ़ा हूं तथा मेरे पास 5 एकड़ से भी कम जमीन है।

y[kd % आप द्वारा तैयार किये हर्बल उत्पाद का सक्षिंप्त विवरण दें।

xjehr flg % मैंने हर्बल क्रांति के नाम से फसलों के लिए ऐसा उत्पाद तैयार किया है जो कि फसल के लिए खाद व कीटनाशक दोनों रूप में प्रभावशाली रूप से कार्य करता है तथा इससे कम खर्च व कम पानी में अधिक फसल प्राप्त की जा सकती है।

y[kd % आप द्वारा तैयार हर्बल खाद कौन–कौन सी फसलों पर प्रभावी है।

xjehr flg % यह सभी फसलों पर प्रभावशाली है जैसे दालों की सभी फसलें बिजाई के पश्चात बिना पानी लगाये पूरी फसल प्राप्त की जा सकती है। सरसों भी बिना पानी लगाये पकाई जा सकती है इसके अतिरिक्त यह ग्वार, बाजरा, गन्ना, धान व गेहूं इत्यिादी की फसलों के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

y[kd % आपकी हर्बल खाद व रासायनिक खाद में क्या अन्तर है।

xjeh r flag % हमारी हर्बल खाद का खर्चा लगभग आधा है। डी.ए.पी. के 50 किलो के थैले के मुकाबले में हमारे द्वारा तैयार 1 लीटर हर्बल बराबर काम करता है तथा हमारी हर्बल खाद जमीन को बंजर होने से बचाती है इससे खारे पानी में भरपूर फसल ली जा सकती है। जबकि रसायनिक खाद के अधिक प्रयोग से जमीन बंजर होती जाती है।

y[kd % आपकी हर्बल खाद अन्य रासायनिक खादों के मुकाबले किस तरह किसानों के लिए अधिक लाभकारी है।

xjeh r flag % बाजार में मिलने वाली 10 किलोजिंक के बराबर हमारी एक किलो जिंक ही काफी है तथा हर्बल खाद से फसल को कम पानी में तैयार किया जा सकता है तथा हर्बल खाद के प्रयोग से आदमियों व पशुओं को फसलों से होने वाली बिमारियों से छुटकारा मिलता है।

y[kd % आप की हर्बल खाद के प्रयोग से फसलों की उत्पादक क्षमता में किस प्रकार वृद्धि होती है।

xjeh r flag % हमारे द्वारा निर्मित खाद च हर्बल कीटनाशक दवाईयों के प्रयोग से जहां भूमि बंजर होने से बचती है जिससे जहां वातावरण में शुद्धता आती है। वहीं आदमियों तथा जानवरों पर भी दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है तथा फसल शुद्ध और भरपूर होती है। बागवानी में भी हमारे हर्बल उत्पाद प्रभावशाली तथा लाभकारी है इनके प्रयोग से बागवानी में काफी उत्पादन प्राप्त करके इस व्यवसाय को अत्यन्त लाभकारी बनाया जा सकता है।

इस प्रकार इस छोटे से किसान ने अपनी मेहनत व दिमाग से कृषि क्षेत्र में एक अद्भूत कारनामा कर दिखाया है। जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। गुरमीत सिंह अपने हर्बल उत्पाद को देश को समर्पित करना चाहते है जिसके लिए उन्हें उत्पाद को प्रमाणित करवाने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में उन्होंने मुख्यमंत्री हरियाणा, राष्ट्रपति भारत, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट पंतजलि हरिद्वार, उपायुक्त सिरसा को मदद के लिए कई आग्रह पत्र लिखे है परन्तु अभी तक इस कृषि वैज्ञानिक को सरकार की तरफ से कोई मदद प्राप्त नहीं हुई है। गुरमीत सिंह के अविष्कार से यह साबित होता है कि ग्रामीण भारत में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है परन्तु इन प्रतिभाओं को सरकारी मदद प्राप्त ना होने के कारण इनकी सफलता आधी अधुरी रह जाती है तथा समाज इन प्रतिभाओं के योगदान से वंचित रह जाता है।

Letter of Sh. Ram Niwas Malik, Engineer-in-Chief (Retd.), E1/5, Gurgaon, 9911078502

To, The Editor, Jat Lehar Chandigarh

Dear Sir,

The address of the Prime Minister on the Independence Day on 15 th August 2014 was full of oratorical skills of Shiri Narendra Modi but otherwise very disappointing in its contents . In fact ,this address was suited more to a social function than the Independence Day of India . Peter Drucker once said , '' Effective leadership is not about making speeches. It is defined by results.'' Independence Day speech is always devoted to honest introspection of the state of affairs in the country and the road map of the government to move ahead. There is none of it in this long speech. The nation , today, is passing through very turbulent period. He is riven with very serious problems e.g. depressed economy , rising population by 18% per decade , frustration of youth for want of employment, uncontrollable recession and inflation , empty stores of Quarter Master General of Indian Army , starving of thermal power plant for coal , 300 million people subsisting under dehumanizing poverty etc. Strangely there is no mention of such burning issues in the address .it is only riddled with a litany of high sounding sermons and rhetoric's.

This shows the mental horizons of the Prime Minister and the party suffer from limitations resulting in absence of visionary approach. The government seems to be answerless to the bludgeoning problems being faced by the country. Otherwise the government by now would have prepared a road map for taking the country ahead in its economic march.

However the address speaks of only two notable decisions .i.e. Sansad Aadarsh Gram Yojana and scrapping of the Planning Commission . Sansad Aadarsh Gram Yojana is a wonderful concept provided it is taken to its logical conclusions in an expeditious manner. In fact this scheme needs to be extended to smaller towns also. The decision to scrap the Planning Commission is debatable like the Collegium in the judiciary. It is a fact that Planning Commission is performing its job below par. But the new Government can easily redefine its role rather than replace it with a new institution whose role will be identical. Kindly publish this letter in the columns of your esteemed newspaper.

Thanking You

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 for Jat Girl 26/5'3" M.Sc. (Maths), B.Ed. (Math & Science) B.Sc. from Punjab University Chandigarh. Teaching in a private Sr. Sec. school, Panchkula. Father Govt. Officer. Own house at Panchkula. Avoid Gotras: Sahu, Sindhu, Jakhar. Cont.: 09465227161
- SM4 for Jat Girl 29.6/5'2" Convent educated. B. Tech (NIFT) Working as Manager in MNC Banglore with Rs. 11 lac package PA. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Khasa (not direct). Cont.: 09988688762
- SM4 for Jat Girl (12.9.87) 27/5'3.5" M.Com, B.Ed. From MDU. Currently teaching Accounts & Business in a reputed school at Rohtak. Father retired from Air Force, Owner of three acre land and own house & plot in village. Avoid Gotras: Dagar, Kharb, Suhag. Cont.: 08053108405
- SM4 for Jat Girl(11.11.85) 29/5'6" M.A (History) from Delhi University. Pursuing M. Phil from Delhi University and getting Scholarship Rs. 5000/- PM. Father MCD (civil) Contractor, Brother Manager in Food Corporation of India. Avoid Gotras: Chhikara, Suhag, Ruhil. Cont.: 09873244677
- SM4 for Jat Girl (13.7.90) 24/5'8" M.A (Economics) Working in a reputed private Company. Avoid Gotras: Hooda, Malik, Khatri. Cont.: 09417529417
- SM4 for Jat Boy 25.6/6'1" M. Tech from PEC. Working as lecturer in a private college at Panchkula. Father Govt. Officer. Own house at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Maan, Dhull, Cont.: 09417869505
- SM4 for Jat Boy 24.6/5'9" . Job in Canada for 2.6 years. Father. Mother in Govt. job in Panchkula. Avoid Gotras: Siwach, Malik, Bajad. Cont.: 09463188807
- SM4 for Jat Boy 28/5'10" MBA from Punjab University. Working as Manager in Steel Industry SAIL in Jharkhand. Avoid Gotras: Nashier, Gehlayan, Deswal. Cont.: 09813143850
- Suitable match for Jat Girl 25.6/5'3" PGT (Chemistry Lecturer) HES-II Preferred class I or II officer resident of Panchkula, Chandigarh & Mohali. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra. Cont.: 09915805679
- Suitable match for Jat Girl 30.6/5'1" JBT. B.Ed. MBA, MSC (Math) Working as JBT teacher in Govt.School near Bahadurgarh (Jhajjar) in Haryana. Avoid Gotras: Dalal, Lakra Gill & not direct Maan, Beniwal, Sihag. Cont.: 09888004417
- Suitable match for Jat Boy 28/5'8" B.Tech. Engineer in MNC at Banglore with Rs.12 lac package PA. Only son based at Panchkula. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra. Cont.: 09915805679
- SM4 Jat Girl 26/5'4" M Pharma Working in I.T. Park Preference professional degree holder. Avoid Gotras: Dhull, Rathi, Lohan Cont.:09416225959
- SM4 Jat Boy 30/5'9" B.A. Economics, MBA Finance from U.K. Expertise in Multinational Banking. 5½ years Experience. Avoid Gotras: Malik, Punia, Mor, Cont. 09896409999

जाट का लहू

/keZthr jk.kk

जो साक्षात् मृत्यु को ललकारे, वह लहू जाट का होता है।
यों तो है सबका लहू लाल, पर होता एक समान नहीं हैं,
केवल लाल रंग की होती, लहू की पहचान नहीं,
कायर, क्रुर, कपूतों का भी, लहू लाल ही होता है,
शायक, शुर सपूतों का भी, लहू लाल ही होता है,
वह भी होता है, लहू लाल जो गीदड़ से डर जाता है,
वह भी होता है, लहू लाल जो सिंहों से लड़ जाता है,
एक लहू जुर्म से कतराता, एक जुर्मो से टकराता है,
एक लहू मचलता लड़ने को, एक मरने से घबराता है,
एक लहू सहन अपमान करें, एक मान के लिए मारता है,
निज स्वाभिमान की रक्षा में सर्वस्व निछावर करता है,
एक लहू का जलवा तो, कुछ अजव ठाठ का होता है।
जो साक्षात् मृत्यु को ललकारे, वह लहू जाट का होता है।
आँधी और तूफानों में, जो कभी नहीं झुक पाया हो,
होते हो ब्रज प्रहारे भले, पर कभी नहीं झुक पाया हो
निज आन–बान की रक्षा में, जो बहने को तैयार रहे,
फांसी के तख्ते पर चढ़कर, सच कहने को तैयार रहे,
सुनकर के बैरी की बोली, बेताब उबलने लग जाये,
जो समर भूमि का नाम सुने, बल्लियां उछालने लग जाये,
जोश भरी एक नई लहर, जो दौड़ा दे भुजदण्डों में,
अखण्ड–प्रंचण्ड प्रतिज्ञा कर, जो अपने प्राण पै अड़ जाये,
मातृभूमि की रक्षा में, बलिवेदी पर जो चढ़ जाये,
बजते ही रणभेरी जिससे, टीका ललाट का होता है।
स्वामित्व भाव हो भरा, दासता जो कभी न स्वीकारे,
लहू की अन्तिम बूदों तक जो अपने पावन प्रण प्यारे,
आदर से नम्र निवेदन, जो मोम की तरह पिंघल जाये,
सदियों का वैर पुराना भी, प्यार में तुरन्त बदल जाये,
जो चाहे सो करवालों, फिर भोला इतना बन जाये,
छल दम्भ कपट की चालों में जो आसानी से आ जाये,
जो दीन दुखी निर्बलों, विकलों के लिए सदा ही मरता हो,
शरणागत की रक्षा जो प्राणों को देकर करता हो,
यदि सम्मुख भूखा देखे तो अपनी थाली भी दे डाले,
औरों के चैन–सुकून हेतू अपनी खुशहाली दे डाले,
तन से भले फकीरी रहे, पर मन सम्राट का होता है।
जो साक्षत् मृत्यु को ललकारे, वह लहू जाट का होता है।
बूढ़े तन में भी रहकर, ललकारे भरी जवानी को,
मरते–मरते भी लिख डाले, जो अपनी अमर कहानी को,
परोपकार के लिये बरसी कण–कण में कुर्बानी हो,
व्यर्थ नहीं जाये जिसकी हर बूंद–बूंद बलिदानी हो,
यदि अपनी पर आ जाये, तो तीनों लोक मसल डाले,
परिवर्तन जिसकी मुट्ठी में पल में भूगोल बदल डाले,
हुंकार भरे अम्बर गुंज, धरती का भी धीरज डोले,
काल बलि का साहस क्या, जो आकर के सम्मुख बोले,
इतिहास के पृष्ठ धन्य किये हों कौसल जिसके बलिदानों ने,
जिसके बल पौरूष की गाथा गाई हो वेद पुरानों ने,
जिसके गौरव को सुनके बोध शक्ति विराट का होता है।
जो साक्षात् मृत्यु को ललकारे, वह लहू जाट का होता है।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

'kghnk dh fprkvk ij yxx gj cjl ey]
oru i ej feVu okyk dk ;gh fu'kk gkxkAA

आपका जन्म 28 सिंतबर सन् 1907 ई. को पंजाब के खटखड़ कलां के सरदार किशन लाल सिंह के घर में हुआ था। आपकी माता जी का नाम विद्यावती था जो बड़े धार्मिक विचारों की औरत थी। अपके दादा जी का नाम अर्जुन सिंह था। वह बड़े बलशाली जाट तथा रूढ़ि विरोधी थे। इनके दो चाचे सरदार अजीत सिंह जिनकी पत्नी का नाम हरनाम कौर था। सरदार अजीत सिंह अनेकों बार "पंगड़ी संभाल जट्टा" का नारा देकर जेल में गये। आपने 65 दिनों का उपवास भी जेल में किया। आप भारत माता की आजादी के लिये विदेशों में चले गये। जहां पर आप 38 वर्षों तक जेल में रहे। भगत सिंह की चाची हरनाम कौर ने देशभक्ति की भावना आप में कूट–कूटकर भर दी थी। भगत सिंह के दूसरे चाचा का नाम स्वर्ण सिंह था उनकी पत्नी का नाम हुक्म कौर था। स्वर्ण सिंह की मृत्यु भी जेल में ही हुई थी। भगत सिंह की चाची हरनाम कौर अपनी जवानी के 38 वर्षों तक तपस्या करती रही क्योंकि उनका पति सरदार सिंह विदेशों में रहकर भारत मां की आजादी का अलख लगा रहे थे।

भगतसिंह के भाई कुलबीर सिह पंजाब किसान सभा के अध्यक्ष रहे थे। वो भी बड़े क्रांतिकारी थे। इनको भी लंबे समय तक जेलों में रखा। 7 सालों तक अंग्रेजी जेलों में रहे। इनके तीसरे भाई रणबीर सिंह ने "कौमी नामक संगठन बनाकर क्रांतिकारी कार्य किये। चौथे छोटे भाई राजेन्द्र सिंह ने 'युग मालिरिया' नामक संस्था बनाकर देश से सांप्रदायिकता विरोधी प्रचार किया। भगत सिंह की तीनों बहनें अमनकौर, सुनीता और शकुन्तला भी क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्र रहे।"

भगत सिंह लाल ने प्राइमरी की पढ़ाई गांव से ही प्राप्त की। इसके पिता ने इनको लाहौर के खालसा कॉलेज में पढ़ाई के लिए भेजा। जब पिता को अंग्रेजी ढंग की पढ़ाई पसंद नहीं आई तो भगत सिंह को डी.ए.वी. कालेज में दाखिल करवा दिया गया। बाद में इन्हें नेशनल कालेज में भर्ती करवाया गया। उसी समय उनकी शादी का प्रोग्राम बनाया गया। जिसके कारण ये घर छोड़कर भाग गये। अल्प आयु में ही आप प्रताप समाचार पत्र के सहसंपादक बन गये। इनके पिता ने माता का समाचार देकर इनको घर वापिस बुला लिया। वहां पर इन्होंने 1924 ई. को भारत नौजवान सभा तैयार की। इसके भाषण बड़े जोशीले थे। वे कहते थे कि आजादी बलिदान व त्याग से ही प्राप्त होगी। उन्होंने ही 'इन्कला जिंदाबाद' का नारा दिया तथा युवाओं को समझाया की आजादी मांगे से नहीं मिलती उसे छिनना होगा। इस प्रकार ये अंग्रेजों की आंखों में खटकने लग गये थे।

पंजाब पुलिस उन्हें पकड़ना चाहती भी। इसके लिये वे बहाने झूझ रही थी। उन्हीं दिनों भगतसिंह अकाली पत्र का संपादन कर रहे थे। इन पत्रिका में अंग्रेज सरकार के खिलाफ कुछ न कुछ छापता रहता था तो इसलिये पुलिस ने भगत सिंह को पकड़ लिया तथा जेल में डाल दिया। उनको उनके साथियों ने जमानत पर छुड़वा लिया। इसके बाद उन्होंने काकोरी कांड के शहीदों के बारे में अकाली पत्र में काफी कुछ छापा। भारत नौजवान सभा की गतिविधियों को जानने के लिये उनमें अपने गुप्तचर छोड़ दिये। साथियों को शक हुआ कि भगत सिंह ही गुप्त बातें बाहर बताता है तो उनकी कठोर परीक्षा ली गई। एक मोमबती जलाई गई उस समय पर उनका हाथ रखवा दिया गया। त्वचा के साथ खून व मांस भी जलकर गिरने लगा। भगत सिंह टस से मस नहीं हुए। उनके साथियों ने ही उनका हाथ हटाया। उस समय भगत सिंह ने कहा था कि अब सब की परीक्षा ऐसी ही होगी। यह बात सुनकर सारे गुप्तचर भाग खड़े हुए।

1928 ई. में सोशलिस्ट रिपलिक आर्मी बनी। इसका नाम भगत सिंह ने ही सुझा था। वह जानते थे कि समाजवाद व गणतंत्र देश आजादी के बिना असंभव थे। इसीलिये वे भारतवर्ष की पूर्ण आजादी चाहते थे। 17 दिसंबर 1928 को भगत सिंह के क्रांतिकारी दल लाला लाजपतराय की हत्या का बदला ले लिया था। इसके अगले दिन 18 दिसंबर को उन्होंने एक पर्चा छपवा कर बांटा। जिसमें लिखा हुआ था कि भारतीयों का खुन जमा नहीं है। वे निष्प्राण नहीं है। कुछ कांग्रेसी नर्म विचारों के नेता हमारा विरोध करते है। जैसे गांध ी व नेहरू लेकिन हम अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए मर मिटने को तैयार खड़े हैं। पर्चों में ये बातें भी छपी हुई थी कि हमें खेद है कि इंसानों का खुन बहाया गया। लेकिन क्रांति के लिये ऐसा करना भी जरूरी है। हमारा उदेद्श्य ऐसा है कि हम ऐसी व्यवस्था पैदा करना चाहते है कि जिसमें मनुष्य का शोषण न करें।

ऐसी स्थिति को देख पंजाब पुलिस ने उन्हें पकड़ने का प्रोग्राम बनाया। सारे पंजाब में गुप्तचर फैला दिये गये। सारे पंजाब में रैड अलर्ट कर दी गई। लेकिन भगत सिंह ने एक बाबू का वेष ध ारण किया चंद्रशेखर आजाद ने उनकी मेम साहिबा का वेष बनाया तथा राजगु ने उनके नौकर का रूप धारण किया वे सभी सिपाहियों की सलामें लेते हुए अमृतसर पहुंच गये। वहां जाकर भगत सिंह ने हथियार बनाने का काम सीखा। वे मजदूरों के बड़े हितैषी व समर्थक थे। वे अंहिसा को आखिरी हथियार मानते थे।

इन घटनाओं के बाद देश की सरकार ने सेफ्टी बिल बनाकर पार्लीमेंट में पास करना चाहा तो उस समय भगत सिंह ने अपने साथी बटुकेश्वर दत के साथ हाऊस में जाकर खाली बैंचों पर बम फैंका। वे भागे नहीं धुआ शांत होने का इंतजार करते रहे। उन्होंने बम किसी को मारने के लिए नहीं बल्कि भारत की गूंगी बैहरी अंग्रेजी सरकार के कानों तक आवाज पहुंचाने का था। यह विश्व में एक अद्वितीय निडरता भरा साहस था। जब धुंआ थम गया तो उन्होंने इन्कलाब जिंदाबाद के नारों से हाऊस अधिकारों व भारत की जनता भरा साहस था। जब धुंआ थम गया तो उन्होंने इन्कलाब जिंदाबाद के नारों से हाऊस गूंज दिया। इनका दूसरा उदेद्श्य यह था कि भारत की जनता अपने अधिकारों व भारत की आजादी के लिये खड़ी हो तथा लड़ना सीखें उन दोनों को पकड़ लिया गया। उन पर 6 जून 1929 को मुकदमें की पहली सुनवाई हुई तथा उन्हें आजीवन कारावास दिया गया।

दोनों क्रांतिकारों को पंजाब में मियावाली जेल में डाल दिया गया। जब उन्होंने वहां पर कैदियों की बुरी दशा देखी तो उन्होंने जेल

दुर्भाग्य में कोई किसी का साथी नहीं होता। देखिए, मरते समय मनुष्य की आंख भी फिर जाती है। – अज्ञात

में ही भूख हड़ताल शुरू कर दी। वहां पर रहते हुए उन्होंने अनेक लेख जो मीडिया के माध्यम से बाहर आकर छापते रहे। इन दिनों भगत सिंह ने 115 दिनों की भूख हड़ताल रखी जो अपने आप से विश्व का रिकार्ड है। यह उनकी दृढ़ निष्ठा का ही प्रसारण था। भारत मां की आजादी के जनून ने उन्हें जिंदा रखा। उन पर असैंबली में बम फैंकना, साडंर्स की हत्या तथा रामलीला जलूस पर बम फैकने के केस चलने लगे। इनके साथियों ने उनको जेल से भगाने की योजना बनाई। परंतु उन्होंने यह कहकर इंकार की दिया कि एक भगौड़े की जिंदगी से अच्छा तो मैं फांसी पर चढ़ना पसंद करूंगा।

उसी समय सारा भारतवर्ष जल रहा था। सारे भारतवासी चाहते थे कि भगतसिंह, राजगुरू व सुखदेव को फांसी न हो उनको छोड़ दिया जाये। उस समय भारतवर्ष 70 प्रतिशत जनता का विश्वास था कि यदि ऐसे बहादुर वीरों को फांसी चढ़ा दिया तो भारत का आजादी और देर से मिलेगी। परंतु दूसरी ओर गांधी जैसे नर्म पंथी अहंकारी नेता नहीं चाहते थे कि ये युवा बच जायें वे तो केवल अंहिसा का ही ढ़ोग रचते रहे। भगत सिंह ऐसा निर्भीक एवं निडर युवा था जिसका वजन फांसी के समय बढ़ गया था। कहते हैं उनका वजन 2 शेर बढ़ गया था। उनकी माता जब उनको जेल में फांसी से पहले मिलने गई थी तो उसने कहा कि 'हे मां तू कितनील महान है तुने ऐसे सपूत को जन्म दिया जो भारत माता के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा रहा है।

मि. जिन्ना ने केंद्रीय असेंबली में 12 दिसंबर 1929 को भाषण देते हुए शहीदे आजम भगत सिंह को बचाने की अपील की थी। इस बात पर असेंबली में कई मिन्टों तक करतल ध्वनियां होती रही थी। इसी दौरान सुभाष चंद्र बोस जी ने भी महात्मा गांधी से मिलकर भगत सिंह को बचाने की बात कही थी। इस मुलाकात में बोस जी गांधी से काफी गर्म बातें हुई थी। इसी दौर में भारतवर्ष के लाखों लोगों ने के हस्ताक्षर करके एक पत्र उस समय के भारतवर्ष के वायसराय लार्ड इरविन को भेजा गया था। इरविन ने वह पत्र गांधी जी को दिखाया था तथा इस पर उनकी राय मांगी थी और कहा था "यदि आप कहे तो फांसी की सजा पर पूनर्विचार हो सकता है।" इस बात के उत्तर गांधी जी ने कहा था" उग्रवादियों की व्यक्ति पूजा से राष्ट्र को बड़ी क्षति हुई हैं, अतः अगर ऐसे श्रेय लोगों को दिया गया तो गुंडागर्दी और पतन के इलावा क्या हासिल होगा।" ये थे राष्ट्र के पिता और महात्मा के विचार एक देश भक्त के बारे में।

जब भगत सिंह अपने साथियों के साथ जेल की सलाखों के पीछे कैद–कौण्डियों से सड़ रहे थे। उस समय गांधी जी जैसे नेता खुली हवा में सांस ले रहे थे। गांधी जी को जेल में सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होती थी लेकिन देशभक्तों को जेलों में यातनाएं दी जाती थी। जेल में रहते हुए भगत सिंह ने लाहौर जेल से जेल अधीक्षक के माध्यम से पंजाब के गवर्नर को कुछ क्रांतिकारी पत्र भेजे थे जिनका सार यहां पर दिया गया है जिसमें लिखा गया था कि "उचित माध्यम एवं समान के साथ मैं ये बातें आपकी सेवा में प्रस्तुत करता हूँ।" हम लोगों को अंग्रेजी शासन के वायसराय जारी किया गया विशेष लाहौर आंध्रप्रदेश के द्वारा फांसी का दंड निश्चित हुआ था। हमारे विरुद्ध इंगलैंड के सम्राट जार्ज पंचम के विरूद्ध युद्ध जारी करने का अपराध लगाया गया है। इसमें दो बातें स्पष्ट थी कि इसमें दोनों राष्ट्रों के बीच युद्ध की स्थिति उपस्थित थी। दूसरी यह है कि हमने युद्ध में भाग लिया है वे आगे लिखित है। हम कहना चाहते हैं कि युद्ध चल रहा है और जब तक जारी रहेगा जब तक अंग्रेजी सरकार श्रम जीवी भारतीयों और जन साधारण के प्राकृतिक साधनों पर अपने स्वार्थ के लिए अधिकार जमाये रहेगी। इस प्रकार के स्वार्थी व्यक्ति चाहे वे अंग्रेजी पूंजीपति हो या भारतीय इन्होंने मिलकर लूट जारी रखी है। गरीबों का शोषण करके उनका खून चूस रहे हैं। इस युद्ध में हमारी बहनें भी हमारा साथ दे रही हैं। उनको भी प्रताड़ित किया जाता है। उन बहनों ने देश पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। हमारे बारे में झूठी कहानियां गढ़ कर हमें बदनाम किया जा रहा है। अतः आजादी का युद्ध चल रहा है और चलता रहेगा।

यह युद्ध अलग–2 रूप से चल रहा है। यह अपना परिवर्तित कर सकता है। यह युद्ध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से चल सकता है। इस युद्ध का प्रभाव सरकार पर अश्वयमेव पड़ेगा। यह युद्ध तब तक चलता रहेगा जब तक साम्यावादी प्रजातंत्र की स्थापना नहीं हो जाती और ऐसा संगठन नहीं हो जाता। जिसमें शोषण करने वालों का शोषण करना बंद हो और समाज एवं मानव जाति को सच्ची शक्ति मिले। अंतिम युद्ध जल्द ही अंतिम युद्ध शुरू होगा। उसमें आखिरी फैसला हो जायेगा। साम्राज्यवाद और पूंजीवाद अब थोड़े दिनों के मेहमान है। यही युद्ध है हमने इसमें खुलकर भाग लिया है। इसके लिए हमें गर्व हैं। यही युद्ध न तो हमने शुरू किया तथा ना ही हमारे साथ समाप्त होगा। यह तो वर्तमान परिस्थितियों का कारण है। हमारा बलिदान तो इतिहास के उस अध्याय में कुछ वृद्धि मात्र कर देगा। जिसे यतीन्द्रनाथ दास तथा भगवती चरण के बलिदानों ने प्रकाशमय बना दिया है। हमने कभी भी प्रार्थना नहीं की ना ही कभी दया की भीख मांगेंगे। हम तो केवल यही कहते हैं कि हम इस युद्ध के बंदी हैं। हमारे साथ युद्ध बन्दियों जैसा व्यवहार किया जायें। हमारा सुझाव है कि हमें फांसी न देकर गोली से उड़ा दिया जायें। हम बड़ी उत्सुकता से आप से निवेदन करते हैं आशा करते हैं आप अत्यंत कृपा पूर्वक सेना विभाग को आज्ञा दे कि हमें प्राण दण्ड देने के लिये वह एक सैनिक दस्ता या टूकड़ी भेजें और गोली मारने का आदेश दें। आशा है आप हमारी बात स्वीकार करेंगे, हम पहले से ही धन्यवाद देना चाहते हैं।

हम है आपके पूर्ण आज्ञाकारी, हस्ताक्षर,
भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव।

अंग्रेज सरकार को भय था कि यदि उनको निश्चित समय पर फांसी दी गई तो देश की जनता भड़क सकती है। इसीलिए सरकार ने 23 मार्च 1931ई. की शाम को ही भारत मां के लाडलों को फांसी पर लटकाने के लिए ले जाया जा रहा था तो उन्होंने कुछ गाने व शब्द बोले थे। वंदेमातरम्, इंकलाब जिंदाबाद तथा भारत माता की जय। इन नारों कें घोष के साथ ही ये वीर बलिदानियों ने फांसी के फंदे को हसंते–2 चूम लिया तथा भारत माता की आजादी के लिए शहीद हो गये। इस प्रकार भगत सिंह ने भारत माता की आजादी के लिए शहीद हो गये। इस प्रकार भगत सिंह ने भारत माता, अपने देश, अपनी कौम जाट जाति का नाम ऊंचा किया। वे जब तक सृष्टि रहेगी अमर रहेंगे। मैं शहीद आजमों को कोटि–2 नमन करता हूं। जो भारत और विश्व के युवाओं के प्रेरणा स्त्रत्रोत बन गये। उन्होंने आखिरी समय में यही गाना गाया था कि माये रंग दे बसंती चोला। बसंती रंग आदिकाल से जाट कौम के झंडे का रंग रहा है।

जब भगत सिंह पांच वर्ष के थे तो एक दिन वे अपने माता–पिता के साथ खेत में गये। उस समय उनके खेत में गन्ना

बोया जा रहा था। बालक ने पूछा यह क्या कर रहे हो। उनके पिता जी ने बताया कि हम एक गन्ने की गनीरी बोयेंगे इससे पांच गन्ने उत्पन्न होंगे। कुछ दिनों के बाद जब वह अपने खेत में गया तो अपने साथ खिलौना पिस्तौल ले गया तथा उसे अपने खेत की मिट्‌टी में गाड़ दिया। जब पिता जी ने पूछा कि क्या कर रहे हो उसने उतर दिया कि मैं पिस्तौल बीज रहा हूं। इससे पांच पिस्तौल पैदा होगी।

जब साइमन कमीशन भारत आया तो लाहौर में लाला लाजपतराय के नेतृत्व में उसका विरोध किया गया। अंग्रेज कमांडर सांडर्स ने पुलिस को आदेश देकर उन पर लाठियों से इतने प्रहार किये कि कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई। उस समय लाहौर की औरतों ने चाहे वह किसी भी धर्म को मानने वाली हो, ने आदमियों को चुड़ियां भेज दी थी। ऐ भारत के पुरूषों तुम चुड़ियां पहन लो हम लाला लाजपतराय की मौत का बदला लेंगे। जब यह समाचार भगत सिंह को मिला तो उसने प्रण लिया कि मैं सांडर्स को मारूंगा। सुनियोजित ढ़ंग से योजना बना कर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव ने सांडर्स को गोलियों से भून डाला तथा लाला लाजपतराय की मौत का बदला लिया इस घटना से उन पर ईनामी गिरफ्तारी के वारंट जारी किये गये। उन्होंने अपना मिशन पूरा करने के लिए अपने केश–कटवा लिये और कलिन सेव बन गया। वह लाहौर से रेलगाड़ी में भगवती चरण की पत्नी तथा उसकी बच्ची के साथ चला था। दुर्गा भाभी जी जो इस समय भगत सिंह की पत्नी के रूप में अपनी सहित फर्स्ट क्लास के बच्ची डब्बे में चढ़े तथा राजगुरू एक चपरासी के रूप में तीसरे दर्जे के डब्बे में उसी रेल में चंद्रशेखर आजाद भी यात्रा कर रहा था। बाकी तो बीच में उतर गये लेकिन भगत सिंह भाभी सहित कलकता पहुंच गए। वहां पर वे अलखपुरीयें सेठ छज्जुराम लाम्बा की हवेली में तीसरी मंजिल पर ठहरे। यह प्रबंध ा सेठ छज्जु राम की पत्नी ने किया। वे वहां पर लगभग दो महीने रहे। पुलिस शक में उनके घर एक बार तलाशी लेने आई। नीचली मंजिल की तलाशी देकर यह कहा गया कि ऊपर तो केवल स्त्रियां रहती हैं। ऐसा कहा गया था क्योंकि उस समय सेठ छाज्जू राम कलकते के एक जाने माने प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। कहते हैं कि इस बात का पता सेठ छाज्जू राम की पत्नी को ही था। सेठ साहिब को तो बाद में पता चला जब वे वहां से रूकसत हुए सेठ साहिब ने उनको काफी पैसे भी दिये ताकि रास्ते में खानपान व हथियारों का प्रबंध कर सकें।

काकोरी खजाना लूट कांड में भी इन्होंने अहम्‌ भूमि निभाई थी। जब उनको पकड़ लिया गया तो उनको जेल में ठूस दिया गया। उन्हौंने अपनी डायरी लिखी थी। उन्होंने उस डायरी में बड़ी सनसनीखेज बातें लिखी थी। वह कहते थे कि हमें गोरे अंग्रेजों से तो आजादी मिल जाएगी लेकिन काले अंग्रेजों से कैसे आजाद होंगे। वह बड़े दूरदर्शी थे इसीलिए उन्होंने ये शब्द अपनी डायरी में लिखे थे। वे चाहते थे कि भारत जनता को विदेशी शासकों से आजादी ही नहीं चाहिए। बल्कि आजादी के बाद भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक को पेट भरने के लिए रोटी, पीने के लिए साफ पानी, रहने के लिए मकान बीमारी के इलाज के लिए दवाईयां चाहिए जो आज आजादी के 60 साल भी उपलब्ध नहीं हो सकी।

जब उन भारत मां के सपूतों को फांसी की सजा सुनाई गई तो उस दिन उसका वजन किया गया तथा जब उनको फांसी से पहले तोला गया तो उनका वजन दो शेर बढ़ गया था। यह थी उस महान शेर की मर्दानगी उनको जब फांसी पर लटकाया गया था। यह थी उस महान शेर की मर्दानगी उनको जब फांसी पर लटकाया गया था जो अवधि फांसी पर लटकाने की होती हैं। उनमें वे मरे नहीं थे उनको सरकार के आदेश पर सांडर्स के हुक्कमानुसार फांसी से उतारा गया तथा जहां पर सांडर्स को मारा था वही पर ले जाया गया था। इस घटना को अंजाम देने के कुनूर और सिंघरा खुफिया के अधि ाकारियों ने रोल किया था उनको 23 मार्च 1931ई. को 7 बजकर 15 मिन्ट पर फांसी पर लटकाया गया था। फांसी से उतार कर लाहौर छावनी के किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया जहां पर सांडर्स के ससुर ने उन तीनों के माथे व छाती में इतनी गोलियां मारी कि उनको छलनी कर दिया गया इस घटना को अंजाम देने के लिए भारत के वायसराय से मंजूरी ले ली गई थी। तीनों को हुसैनीवाला के स्थान पर रात्रि के समय इसलिए अगिन के सुपूर्द कर दिया गया था कि कहीं पोस्टमार्टम की रिपोर्ट में उन गोलियों के निशान न आ जायें तथा इससे सारे भारत में दंगे फसाद ना शुरू हो जायें। अंग्रेजों ने उस जल्लाद को भी गोलियों से भून डाला जिसने इन तीनों को फांसी पर लटकाया था तथा उसके सामने उनको उतर कर जब उनके शरीर में सांस चल रहे थे ले गये थे ताकि यह जल्लाद इस रहस्य को उजागर ना कर दें। इस प्रकार की क्रुरता का परिचय दिया था उस अंग्रेजी सरकार ने उन भारत मां के दीवानों को।

माँ

- जिन बेटों के जन्म पर माँ–बाप ने हंसी–खुशी के लड्डू बाँटे, वही जवान होकर माँ–बाप को बाँटे, हाय कैसी करूरता।
- माँ तब रोती थी, जब बेटा खाना नहीं खाता था, और माँ अब भी रोती है जब बेटा खाना नहीं देता।
- माँ–बाप की आँखों में दो बार आँसू आते हैं, लड़की घर छोड़े तब और बेटा मुँह मोड़े तब।
- आठ वर्ष का तेरा लाडला जो तुझसे प्रेम की प्यास रखे, तो अस्सी वर्ष के तेरे माँ–बाप तुझसे प्रेम की आस क्यों न रखें।
- जिन बेटों को माँ–बाप ने बोलना सिखाया, वो बड़े होकर माँ–बाप को चुप रहना सिखाते हैं।
- पत्नी पसन्द से मिल जाती है पर माँ पूण्य से मिलता है। पसन्द से मिलनें वाली के लिए पुण्य से मिलने वाली माँ को मत ठुकराना।
- पेट में जिस माँ को 5 बेटे भारी नहीं लगे थे वो माँ पाँच बेटों को भारी लग रही है। इस देश को श्रवण का देश कौन मानेगा?
- जब छोटा था तो माँ की शैय्या गीली रखता था, अब बड़ा हो गया तो माँ की आँखे गीली रखता है। पुत्र–शायद तूझे माँ को गीले रखने की आदत हो गई है।

os ije HkkX;oku gSa] ftUgsa thrs th viuas
ekrk&firk dk egRo le> esa vk x;kA

भाई सुरेंद्र सिंह मलिक मैमोरियल स्पोर्ट्स स्कूल निडानी (जींद) हरियाणा के उभरते सितारे

ममता सिहाग

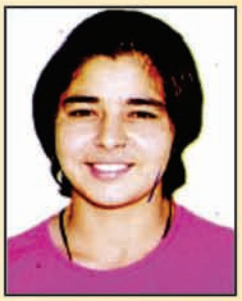

सरिता मोर

नैन सुताना

हमें जिन पर नाज़ है।

भाई सुरेंद्र सिंह मलिक मैमोरियल स्पोर्ट्स स्कूल निडानी (जींद) हरियाणा एक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खेल संस्थान है जिनके उत्कृष्ट खिलाड़ी राष्ट्रीय व अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर कबडडी, कुश्ती आदि खेलों में अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। अब तक स्कूल के खिलाड़ी कबड्डी में 46 पदक प्राप्त कर चुके हैं जिसमें 12 स्वर्ण पदक शामिल हैं।

हाल ही में यूरोप के क्रोसिया में चार से सात अगस्त तक आयोजित हुई वर्ल्ड जूनियर कुश्ती प्रतियोगिता में इस स्कूल की तीन महिला खिलाड़ियों नामतः ममता सिहाग सिसाय 48 किलोग्राम, सरिता मोर 58 किलोग्राम व नैन सुताना 67 किलोग्राम ने भाग लिया, जिनमें ममता सिहाग ने अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हुए क्वार्टर फाइनल में चीन की पहलवान को 12–1 से हराकर कांस्य पदक हासिल किया। सरिता मोर का 58 किलोग्राम भार वर्ग में 8 सितंबर से 12 सितंबर तक रूस के ताशकंद में आयोजित की जाने वाली विश्व कुश्ती प्रतियोगिता के लिये भी चयन हुआ है।

खेलों के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी इस स्कूल के छात्रों की विषेश उपलब्धियां रहीं हैं। इस स्कूल में हर वर्ष जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा आयोजित किये जाने वाले अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का केंद्र बनाया जाता है जिसमें स्कूल के छात्रों को उच्च स्कोर प्राप्त करने पर सभा द्वारा इनाम देकर सम्मानित किया जाता है।

जाट सभा चंडीगढ़ के समस्त सदस्यगण खेल स्कूल निडानी के उक्त तीनों उत्कृष्ट खिलाड़ियों विशेषकर ममता सिहाग को उनकी शानदार कामयाबी पर बार–बार बधाई देकर इन सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

हमें जिन पर गर्व है

जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के आजीवन सदस्य व स्वास्थ्य विभाग यूटी चंडीगढ़ में स्वास्थ्य सुपरवाईजर के पद पर कार्यरत श्री राजबीर सिंह हुडा के सुपुत्र डा. अमन हुडा ने पीजीआई एमईआर चंडीगढ़ द्वारा जुलाई 2014 में आयोजित परीक्षा आल इंडिया स्तर पर 15वां स्थान प्राप्त करके 99.67 प्रतिशत अंक लेकर उर्त्तीण की व ट्राईसिटी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अब श्री अमन हुडा पीजीआई चंडीगढ़ में आर्थोपडिक्स में एमएस कर रहे हैं। वर्ष 2008 में श्री हुडा ने आल इंडिया प्री मेडिकल प्रवेश परीक्षा–2008 में 50वां स्थान प्राप्त कर गवर्नमेंट मेडिकल कालेज एवं हस्पताल सेक्टर–32 चंडीगढ़ में एमबीबीएस में प्रवश किया था।

इन्होंने सीबीएसई, पीएमटी परीक्षा में 1612 रैंक, हरियाणा वैटरनरी प्रवेश परीक्षा में 11वां रैंक तथा आल इंडिया वैटरनरी प्रवेश परीक्षा में 98वां स्तर हासिल करने का भी गौरव प्राप्त है।

श्री अमन हुडा की इन शानदार उपलब्धियों पर जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला के समस्त सदस्यगण उनको बार–2 बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 **RNI No. CHABIL/2000/3469**

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।